

---

## AVYAKT MURLI

25 / 08 / 71

---

25-08-71 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

चलना-मानना अर्थात् स्वरूप बनना।

मुख्य 7 कमजोरियां और उनको मिटाने के लिए 7 दिन का कोर्स

एक सेकेण्ड में वाणी से परे स्थिति में स्थित हो सकते हो? जैसे और कर्मेन्द्रियों को जब चाहो जैसे चाहो वैसे हिला सकते हो, ऐसे ही बुद्धि की लगन को जहाँ चाहो, जब चाहो वैसे और वहाँ स्थित कर सकते हो? ऐसे पावरफुल बने हो? यह विधि वृद्धि को पाती जा रही है? अगर विधि यथार्थ है तो विधि से सिद्धि अर्थात् सफलता और श्रेष्ठता अवश्य ही दिन प्रति-दिन वृद्धि को पाते हुए अनुभव करेंगे। इस परिणाम से अपने पुरुषार्थ की यथार्थ स्थिति को परख सकते हो। यह सिद्धि विधि को परखने की मुख्य निशानी है। कोई भी बात को परखने के लिए निशानियां होती हैं। तो इस निशानी से अपने सम्पूर्ण बुद्धि की निशानी को परख सकते हो? आजकल जो पुरुषार्थ पुरुषार्थियों का चल रहा है उसमें मुख्य कमजोरियां कौनसी दिखाई देती हैं? (1) एक तो स्मृति में समर्थी नहीं रही है। (2) दृष्टि में

दिव्यता वा अलौकिकता यथा शक्ति नम्बरवार आई हुई है। (3) वृत्ति में विल पावर न होने का कारण वृत्ति एकरस न हो, चंचल होती है। (4) निराकारी अवस्था का अटेन्शन कम होने के कारण मुख्य विकार देह-अभिमान, काम और क्रोध - इन तीनों का वार समय प्रति समय होता रहता है। (5) संगठन में रहते वा संपर्क में आते वायुमण्डल, वायुब्रेशन अपना इम्प्रेसन डालता है। (6) अव्यक्त फरिश्तेपन की स्थिति कम होने कारण अच्छी वा बुरी बातों की फीलिंग आने से फेल हो जाते हैं। (7) अपनी याद की यात्रा से सन्तुष्ट कम। यह है पुरुषार्थियों के पुरुषार्थ की नम्बरवार रिजल्ट।

अब इन सात बातों को मिटाने के लिए फिर से 7 दिन का कोर्स कराना पड़े। इन सातों बातों को सामने रख सात दिन का कोर्स जो औरों को कराते हो वह अपने आप को रिवाइज़ कराना। जैसे मुरलियों को रिवाइज़ कर रहे हो, तो रिवाइज़ करने से नवीनता और शक्ति बढ़ने का अनुभव करते हो ऐसे अब एकान्त में बैठ अमृतवेले, जो सात बातें सुनाइं, उन पर एक एक बात का निवारण हर दिन के पाठ में कैसे समाया हुआ है, वह मनन करके मक्खन अर्थात् सार निकालना और आपसमें लेन-देन करना। कोर्स तो किया है लेकिन जैसे जिज्ञासुओं को कोर्स कराने के बाद हर पाठ की युक्ति बताते हो वा अटेन्शन दिलाते हो, वैसे आप हर एक रेगुलर गॉडली स्टूडेंट अब फिर से एक सप्ताह एक पाठ को प्रैक्टिस और

प्रैक्टिकल में लाओ। जैसे साप्ताहिक पाठ करते हैं ना। आप लोग भी सर्विस में 'पवित्रता सप्ताह' वा 'शान्ति सप्ताह' का प्रोग्राम रखते हो ना। वैसे ही अपनी प्रोग्रेस के लिए हर पाठ का साप्ताहिक पाठ प्रैक्टिकल और प्रैक्टिस में लाओ। तो रिवाइज होने से क्या होगा? सफलता समीप, सहज और स्पष्ट दिखाई देगी। तो श्रेष्ठ तो बन ही जायेंगे। अपने आप को हर संकल्प वा कर्म में महान् बनाने के लिए सभी से सहज युक्ति की तीन बातें सुनाओ। मन, वचन, कर्म में महानता के लिए ही पूछ रहे हैं।

महान् बनने के लिए एक तो अपने को पुरानी दुनिया में मेहमान समझो। दूसरी बात - जो भी संकल्प वा कर्म करते हो, तो महान् अन्तर को बुद्धि में रख संकल्प और कर्म करो। तीसरी बात कि बाप के वा अपने दैवी परिवार की हर आत्मा के गुण और श्रेष्ठ कर्तव्य की महिमा करते रहो। 1. मेहमान, 2. महान् अन्तर और 3. महिमा। यह तीन बातें चलती रहें तो जो 7 कमियां हैं वह समाप्त हो जाएं। मेहमान न समझने के कारण कोई भी रूप वा रंगत में अट्रैक्शन और अटेन्शन जाता है। महान् अन्तर को सामने रखने से कभी भी देह-अहंकार वा क्रोध का अंश वा वंश नहीं रह सकता। तीसरी बात - बाप की वा हर आत्मा के गुणों की महिमा वा कर्तव्य की महिमा करते रहने से किसी द्वारा किसी बात की फीलिंग नहीं आ सकती। और सदैव गुणों और कर्तव्यों की महिमा करने से याद की यात्रा, असन्तुष्टता भी निरन्तर वा सहज याद में परिवर्तन हो जायेगी। इन तीनों

शब्दों को सदा स्मृति में रखो तो समर्थीवान हो जायेंगे। दृष्टि वृत्ति, वायुमण्डल सभी परिवर्तन हो जायेंगे।

द्वापर से लेकर आज तक अपनी और अपने दैवी परिवार की आत्माओं की महिमा करते आये हो, कीर्तन करते आये हो। अब फिर चैतन्य परिचित हुई आत्माओं के अवगुणों को वा कमियों को क्यों देखते हो वा बुद्धि में धारण क्यों करते हो? अभी भी सारे विश्व से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मियों के गुण-गान करो। बुद्धि द्वारा ग्रहण करो और मुख द्वारा एकदो के गुणगान करो। फिर दृष्टि वा वृत्ति चंचल होगी? किसकी भी कमी की फीलिंग होगी? अभी अनुभव किया है कि कोई भी मन्दिर की मूर्ति कितनी भी अट्रैक्टिव वा सुन्दर सजी हुई होतो कभी भी दृष्टि उनकी सुन्दरता वा सजावट के तरफ संकल्प मात्र भी चंचल नहीं होती है। और वहाँ ही अगर कोई सिनेमा वा कोई ऐसी किताबों में से कोई अट्रैक्शन वा सजावट देखते हैं वा कोई बोर्ड भी देखते हैं तो वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है क्यों? अट्रैक्शन तो मूर्तियों में भी है। सजावट फीचर्स और नेचर्स की ब्यूटी मूर्तियों में भी है फिर भी वृत्ति और दृष्टि चंचल क्यों नहीं होती? दोनों ही चित्र सामने रखो वा एक ही कमरे में रखो तो एक सेकेण्ड में उस तरफ जाने से वृत्ति चंचल होती है और उस तरफ जाने से वृत्ति पवित्र बन जाती है। यह पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है? स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है; तो यह स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है। और

स्मृति है कि यह फीमेल है, तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खँचती है। वहाँ रूप को देखेंगे और वहाँ रूहानियत को देखेंगे। ऐसा पास्ट का अनुभव तो होगा ना। वर्तमान भी परसेन्टेज में है। लेकिन इसको मिटाने के लिए कभी भी कहाँ भी देखते हो, किससे भी बोलते हो तो स्मृति में क्या रखो? आत्मा समझना, वह तो हुई फर्स्ट स्टेज। लेकिन कर्म में आते, सम्पर्क में आते, सम्बन्ध में आते यही स्मृति रखो कि यह सभी जड़ चित्रों की चैतन्य देवी वा देवताओं के रूप हैं। तो देवी का रूप स्मृति में आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह का अट्रैक्शन नहीं होता है, ऐसे ही चैतन्य रूप में भी यह स्मृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी और कम्पलीट हो जायेंगे। समझा? यह हैं वर्तमान पुरुषार्थियों की कम्पलेन के ऊपर कम्पलीट बनने की युक्तियां।

अच्छा भट्ठी वाले अपनी उन्नति कर रहे हैं। स्पीड भी तीव्र है? ऐसे नहीं कि समाप्ति के बाद नीचे उतरते स्पीड कम हो जाये। ऐसा ही पुरुषार्थ कर रहे हो ना। अच्छा।

---

## QUIZ QUESTIONS

---

प्रश्न 1 :- अपने पुरुषार्थ की यथार्थ स्थिति को कैसे परख सकते हैं ?

प्रश्न 2 :- आज की मुरली में बाबा ने आजकल जो पुरुषार्थ पुरुषार्थियों का चल रहा है उनमें मुख्य जो कमजोरियाँ बताई वो कौन सी है ?

प्रश्न 3 :- अपने हर संकल्प वा कर्म को महान बनाने के लिए सहज युक्ति की कौन सी तीन बातें बापदादा ने सुनाई ?

प्रश्न 4 :- बाप वा अन्य आत्माओं के गुणों वा कर्तव्यों की महिमा करने से क्या हो जायेगा ?

प्रश्न 5 :- आज की मुरली में बापदादा ने साप्ताहिक पाठ को प्रैक्टिकल और प्रैक्टिस में लाने वा रिवाइज करने के लिए क्यों कहाँ ?

FILL IN THE BLANKS:-

( समाप्त, शक्ति, कमियाँ, सात, कोर्स, आत्मा, समृति, रूप, गुणगान, मुख, बुद्धि, नवीनता )

1 अब इन \_\_\_\_\_ बातों को मिटाने के लिए फिर से 7 दिन का \_\_\_\_\_ कराना पड़े ।

2 तो रिवाइज करने से \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ बढ़ने का अनुभव करते हो

3 अभी भी सारे विश्व से चुने हुए श्रेष्ठ आत्माओं के \_\_\_\_\_ करो ।  
\_\_\_\_\_ द्वारा ग्रहण करो । और \_\_\_\_\_ द्वारा एक दो के गुणगान करों ।

4 \_\_\_\_\_ समझना वह तो हुई फस्ट स्टेज । लेकिन कर्म में आते  
सम्पर्क में आते, संबंध में आते यही \_\_\_\_\_ रखो कि यह सभी जड़ चित्रों  
की चैतन्य देवी वा देवताओं के \_\_\_\_\_ है ।

5 1- मेहमान 2- महान अन्तर और 3 - महिमा । यह तीन बातें चलती रहें  
तो जो 7 \_\_\_\_\_ है वह \_\_\_\_\_ हो जायें ।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- मेहमान न समझने के कारण कोई भी रूप वा रंगत में अट्रैक्शन और  
अटेनशन जाता है ।

2 :- यह पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है ? विस्मृति ।  
स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृति को पवित्र बनाते है ।

3 :- महान अन्तर को सामने रखने से कभी भी देह अहंकार वा क्रोध का  
अंश वा वंश नहीं रह सकता ।

4 :- तो देवी का रूप समृति में आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह की अट्रैक्शन नहीं होती है । ऐसे ही चैतन्य रूप में भी यह समृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी ।

5 :- जैसे जिज्ञासुओं को कोर्स कराने के बाद हर पाठ की युक्ति बताते हो वा अटेनशन दिलाते हो वैसे आप हर एक रेगुलर गाडली स्टुडेन्ट अब फिर से एक सप्ताह एक पाठ को प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल में लाओ ।

---

## QUIZ ANSWERS

---

प्रश्न 1 :- अपने पुरुषार्थ की यथार्थ स्थिति को कैसे परख सकते हैं ?

उत्तर 1 :- अगर विधि यथार्थ है तो विधि से सिद्धि अर्थात सफलता और श्रेष्ठता अवश्य ही दिन प्रतिदिन वृद्धि को पाते हुए अनुभव करेंगे । इस परिणाम से अपने पुरुषार्थ की यथार्थ स्थिति को परख सकते हो ।

प्रश्न 2 :- आज मुरली में बाबा ने आजकल जो पुरुषार्थ, पुरुषार्थियों का चल रहा है उनमें मुख्य जो कमजोरियाँ बताई वो कौन सी हैं ?

उत्तर 2 :- आजकल जो पुरुषार्थ पुरुषार्थियों का चल रहा है उसमें मुख्य कमजोरियों के बारे में बापदादा ने बताया कि :-

.. ❶ एक तो स्मृति में समर्थी न रही है।

.. ❷ दृष्टि में दिव्यता वा अलौकिकता यथाशक्ति नम्बरवार आई हुई है।

.. ❸ वृत्ति में विल पावन न होने कारण वृत्ति एकरस न हो चंचल होती है।

.. ❹ निराकारी अवस्था का अटेन्शन कम होने के कारण मुख्य विकार देहअभिमान, काम और क्रोध इन तीनों का वार समय प्रति समय होता रहता है।

.. ❺ संगठन में रहते वा संपर्क में आते वायुमंडल, वायुब्रेशन अपना इम्प्रेसन डालती है।

.. ❻ अव्यक्त फरिश्तेपन की स्थिति कम होने कारण अच्छी वा बुरी बातों की फीलिंग आने से फेल हो जाते हैं।

.. ❼ अपनी याद की यात्रा से संन्तुष्ट कम।

प्रश्न 3 :- अपने हर संकल्प वा कर्म को महान बनाने के लिए सहज युक्ति की कौन सी तीन बातें बापदादा ने बताई ?

उत्तर 3 :- महान बनने के लिए बापदादा ने युक्तियाँ बताई कि :-

.. ① एक तो अपने को पुरानी दुनिया में मेहमान समझो ।

.. ② दूसरी बात जो भी संकल्प वा कर्म करते हो तो महान अन्तर को बुद्धि में रख संकल्प और कर्म करो ।

.. ③ तीसरी बात कि बाप के वा अपने दैवी परिवार की हर आत्मा के गुण और श्रेष्ठ कर्तव्य की महिमा करते रहो ।

प्रश्न 4 :- बाप वा अन्य आत्माओं की महिमा करने से क्या हो जायेगा ?

उत्तर 4 :- तीसरी बात बाप की वा हर आत्मा के गुणों की महिमा वा कर्तव्य की महिमा करते रहने से किसी द्वारा किसी बात की फीलिंग नहीं आ सकती और सदैव गुणों और कर्तव्य की महिमा करने से याद की यात्रा, असन्तुष्टता भी निरंतर वा सहज याद में परिवर्तन हो जायेगी।

प्रश्न 5 :- आज की मुरली में बापदादा ने साप्ताहिक पाठ को प्रैक्टिकल और प्रैक्टिस में लाने वा रिवाइज करने के लिए क्यों कहाँ ?

उत्तर 5 :- जैसे साप्ताहिक पाठ करते हैं ना । आप लोग भी सर्विस में पवित्रता सप्ताह वा शांति का प्रोग्राम रखते हो ना । वैसे ही अपने प्रोगेस के लिए हर पाठ का साप्ताहिक पाठ प्रैक्टिकल और प्रैक्टिस में लाओ ।

तो रिवाइज होने से क्या होगा, सफलता समीप, सहज और स्पष्ट दिखाई देगी तो श्रेष्ठ तो बन ही जावेंगे ।

FILL IN THE BLANKS:-

( समाप्त, शक्ति, कमियाँ, सात, कोर्स, आत्मा, समृति, रूप, गुणगान, मुख, बुद्धि, नवीनता )

1 अब इन \_\_\_\_\_ बातों को मिटाने के लिए फिर से 7 दिन का \_\_\_\_\_ कराना पड़े ।

.. सात / कोर्स

2 तो रिवाइज करने से \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ बढ़ने का अनुभव करते हो ।

.. नवीनता / शक्ति

3 अभी भी सारे विश्व से चुने हुए श्रेष्ठ आत्माओं के \_\_\_\_\_ करो । \_\_\_\_\_ द्वारा ग्रहण करो । और \_\_\_\_\_ द्वारा एक दो के गुणगान करों ।

.. गुणगान / बुद्धि / मुख

4 \_\_\_\_\_ समझना वह तो हुई फस्ट स्टेज । लेकिन कर्म में आते, संबंध में आते यही \_\_\_\_\_ रखों कि यह सभी जड़ चित्रों की चैतन्य देवी वा देवताओं के \_\_\_\_\_ है ।

.. आत्मा / स्मृति / रूप

5 1- मेहमान 2 - महान अन्तर और 3 - महिमा । यह तीनों बातें चलती रहें तो जो 7 \_\_\_\_\_ है वह \_\_\_\_\_ हो जायें ।

.. कमियां / समाप्त

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करें:-

1 :- मेहमान न समझने के कारण कोई भी रूप वा रंगत में अट्रैक्शन और अटेनशन जाता है । **【✓】**

2 :- यह पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है ? विस्मृति । स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृतिदृष्टि और वृत्तिको पवित्र बनाते हैं । **【✗】**

.. यह पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है ? स्मृति । स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाते है ।

3 :- महान अन्तर को सामने रखने से कभी भी देह अहंकार वा क्रोध का अंश वा वंश नहीं रह सकता । 【✓】

4 :- तो देवी का रूप समृतिमें आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह की अट्रैक्शन नहीं होती है । ऐसे ही चैतन्य रूप में भी यह समृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी । 【✓】

5 :- जैसे जिज्ञासुओं को कोर्स कराने के बाद हर पाठ की युक्ति बताते हो वा अटेनशन दिलाते हो वैसे आप हर एक रेगुलर गाडली स्टुडेंट अब फिर से एक सप्ताह एक पाठ को पैक्टिस और प्रैक्टिकल में लाओ। 【✓】